शंकराचार्य

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस]

चर्चा में क्यों:

अयोध्या में **राम मंदिर के उद्घाटन में शामिल न होने** के चार [शंकराचार्यों] के फैसले ने काफी ध्यान आकर्षित किया है।

शंकराचार्य कौन हैं?

- **परिचय: शंकराचार्य** (शंकर के मार्ग के शिक्षक), **एक धार्मिक उपाधि** है जिसका उपयोग **चार प्रमुख मठों या पीठों के प्रमुखों** द्वारा किया जाता है, जिनके बारे में माना जाता है कि इन्हें **आदि शंकराचार्य (लगभग 788 ई.-820 ई.**) द्वारा स्थापित किया गया था।
  - परंपरा के अनुसार, वे धार्मिक शिक्षक हैं जो स्वयं आदि शंकराचार्य तक जाने वाले **शिक्षकों की एक पंक्ति से संबंधित** हैं, हालाँकि 14 वीं शताब्दी ईस्वी से पहले इसके बारे में **ऐतिहासिक साक्ष्य दुर्लभ** हैं।
- **मठ:** ये चार मठ **द्वारका (गुजरात), जोशीमठ (उत्तराखंड), पुरी (ओडिशा) एवं शृंगेरी (कर्नाटक)** में हैं।
  - वे धार्मिक तीर्थस्थलों, मंदिरों, पुस्तकालयों और आवासों के रूप में कार्य करते हैं। वे शंकर की **परंपरा को संरक्षित एवं प्रचारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाते हैं।
  - **14वीं शताब्दी** से पहले इन मठों के अस्तित्व के बहुत कम ऐतिहासिक साक्ष्य हैं, जब [विजयनगर साम्राज्य] ने शृंगेरी मठ को संरक्षण देना शुरू किया था।

आदि शंकराचार्य कौन थे?

- **परिचय: आदि शंकराचार्य 8वीं सदी के भारतीय दार्शनिक और धर्मशास्त्री थे,** जिन्हें हिंदू धर्म के इतिहास में सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में से एक माना जाता है।
  - ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म **केरल के कलाडी** गाँव में हुआ था।
  - **गोविंदाचार्य** से अध्ययन आरंभ करने के बाद, शंकर ने बड़े पैमाने पर यात्रा की, दार्शनिक परंपराओं को चुनौती दी और **मठों की स्थापना** की।
- **प्रमुख योगदान:**
  - **व्यवस्थित अद्वैत वेदांत:** वास्तविकता की **अद्वैतवादी प्रकृति** को समझने के लिये एक रूपरेखा प्रदान की।
  - **प्रकाशमान हिंदू धर्मग्रंथ: उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र और भगवद गीता** पर टिप्पणियों सहित 116 कृतियाँ लिखीं।
  - **भक्ति आंदोलन का प्रचार किया: ईश्वर के प्रति भक्ति और समर्पण** के महत्त्व पर बल दिया, जिससे बाद के भक्ति आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **प्रमुख रचनाएँ/टिप्पणियाँ:**
  - **भाष्य ग्रंथ:**
    - ब्रह्म सूत्र
    - ईसावास्य उपनिषद
    - केन उपनिषद
    - कठ उपनिषद
    - प्रश्न उपनिषद
    - मुण्डक उपनिषद
    - मांडूक्य उपनिषद
    - मांडूक्य कारिका
    - भगवद गीता
  - **प्रकरण ग्रंथ:**
    - विवेक चूड़ामणि
    - अपरोक्षानुभूति
    - उपदेशसहस्री

        - स्वात्मनरि्पणम्
        - आत्म बोध
        - सर्व वेदांत सार संग्रह
        - अद्धैतानुभूत
        - ब्रह्मानुचन्तिनम्
        - अनुसन्धानम्
    - **भजन एवं ध्यान छंद:**
        - श्री गणेशपञ्चरत्नम्
        - गणेश भुजंगम
        - सुब्रह्मण्य भुजङ्गम्

नोट:

हालाँक शिंकर के अनेक कार्यों के लेखकत्व के संबंध में ववािद की स्थतिहि कतुि उनका योगदान तत्त्वमीमांसा तथा धर्मशास्त्र से परे अन्य वषियों में भी है जसिमें **आस्था, दर्शन एवं भूगोल की राष्ट्रवादी** संबंधी व्याख्या शामलि है।

- **अद्वैत वेदांत के मूल सद्धिांत:**
    - अद्वैत वेदांत **कट्टरपंथी अद्वैतवाद की एक सत्तामूलक स्थति** प्रस्तुत करता है।
    - इसके अनुसार **कथति वास्तवकिता अंततः भ्रामक (माया)** है तथा केवल ब्राह्मण ही अनुभवजन्य बहुलता से परे एकमात्र सच्ची वास्तवकिता है।
    - यह **आत्मन् (वैयक्तकि चेतना) तथा ब्राह्मण (अंतमि वास्तवकिता) की एकता** पर बल देता है।

नोट:

मध्य प्रदेश के खंडवा ज़लि में मांधाता पर्वत पर 108 फीट की ऊँचाई पर स्थति **आद शिंकराचार्य** को समर्पति 'स्टैच्यू ऑफ वननेस' का अनावरण कयिा गया।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/shankaracharyas